डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर पैनल चर्चा का आयोजन

'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय ज्ञान परंपरा मुखरित थी' – बी.पी. सिंह

'भारत का इतिहास गुलामी नहीं संघर्षों का इतिहास है' – बल्देव भाई शर्मा

'साहित्य जन के संघर्षों का इतिहास है' – चित्रा मुद्गल

15 अगस्त 2020, नई दिल्ली। भारत के स्वंतत्रता दिवस के अवसर पर साहित्य अकादेमी ने पैनल चर्चा का आयोजन किया। पैनल चर्चा का विषय था – स्वतंत्रता, संविधान और साहित्य। अपने स्वागत वक्तव्य में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने बताया कि अकादेमी पिछले कई वर्षों से स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर पैनल चर्चा का आयोजन करती आ रही है, जिसमें अलग–अलग अनुशासनों में कार्य करने वाले विशेषज्ञ वक्ताओं ने सहभागिता की है। यह कार्यक्रम भी इसी परंपरा का एक सोपान है।

उन्होंने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि स्वतंत्रता दरअसल उस वातावरण को तत्पर भाव से बनाए रखने का नाम है जिससे व्यक्ति को अपने आत्म–विकास का अधिकतम सुअवसर प्राप्त हो सके। भारतीय संविधान ने 'विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता को व्यक्तियों तथा राष्ट्र के आत्मिक उत्कर्ष के लिए आवश्यक माना है और उनका प्रस्तावना में आश्वासन दिया है। संविधान द्वारा प्रतिभूत सबसे पहली स्वतंत्रता वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। स्वतंत्रता के अध्याय में इसे शीर्षस्थ स्थान देना इस बात का प्रमाण है कि यह लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की आधार शिला है। इसे 'चतुर्थ कला' भी कहा गया है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में ऐसे विभिन्न अनुशासनों के विद्वानों को आमंत्रित किया है जिससे कि उनके विशेष अनुभवों के सहारे 'स्वतंत्रता, संविधान और साहित्य' विषय के अनेक आयामों पर प्रकाश पड़ सके।

सिक्किम के पूर्व राज्यपाल और प्रख्यात लेखक बी.पी. सिंह ने भारतीय स्वतंत्रता आदोलन के वैचारिक आधार को रेखांकित करते हुए लोकमान्य तिलक के 'गीतारहस्य' का उल्लेख किया और कहा कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय ज्ञान परंपरा मुखरित थी।